# किशोर बालक-बालिकाओं के नैतिक मूल्यों पर शिक्षा के माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन

*डॉ. श्रीमती अर्चना गुप्ता ** डॉ. श्रीमती मधुलिका श्रीवास्तव
*** बी.निगम **** कु. माधुरी रामटेके

**शोधपत्र**

आज बच्चों को जो हमारे समाज की रीढ़ कहे जा रहे हैं उन्हें परिवार के आदर्शों, नैतिक मूल्यों और समाज में आचार–व्यवहार की शिक्षा देने वाले परिवार में कोई बुजुर्ग नहीं हैं। संयुक्त परिवार के टूटने के कारण परिवार में माता–पिता एवं उनके बच्चे ही रहते हैं। कामकाजी होने के कारण माताएं भी अपने बच्चों को अधिक समय नहीं दे पातीं जिसके कारण बढ़ती उम्र के अनेक प्रश्नों के उत्तर आज बच्चों के लिये अनुत्तरित रह जाते हैं। परिणाम यह हो रहा है कि बच्चे मार्गदर्शन के अभाव में दिशाहीनता की ओर बढ़ रहे हैं और गंदी आदतों तथा अनैतिक गतिविधियों में संलग्न हो रहे हैं।

कहावत है "उजले कल के लिये हमारे को रोशन करना पड़ेगा", क्योंकि आज का छात्र ही कल के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों का सूत्रधार होगा। जीवन के प्रारंभिक स्तर से ही छात्रों को वास्तविक नैतिक शिक्षा देने का हर संभव प्रयास करना होगा। अच्छी आदतें नैतिक शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग हैं सामान्य रूप से विद्यार्थी को जिस प्रकार का शिक्षण दिया जाता है उसका प्रभाव उसके जीवन को एक विशेष आकार प्रदान करने में होता है।

व्यक्ति के जीवन में भाषा के महत्व को देखते हुए इसका शैक्षिक माध्यम के रूप में उपयोग महत्वपूर्ण हो जाता है। भाषा की व्यक्ति के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यालयीन शिक्षा में भाषा का अपना अलग–अलग महत्व है। सामान्य रूप से विभिन्न अनुसंधान यह दर्शाते हैं कि व्यक्तित्व के विकास में पढ़ने वाले माध्यम की अपनी विशिष्ट भूमिका है। **विश्वकर्मा (2002)** के अध्ययन परिणामों से ज्ञात हुआ कि छात्र–छात्राओं के नैतिक मूल्य "ईमानदारी" में अधिक अंतर नहीं है जबकि नैतिक मूल्य "मानवता" एवं "विनम्रता" में दोनों के मध्य अंतर अधिक पाया जाता है। **एन.के. सिन्हा (2006)** के द्वारा किये गये अनुसंधान में परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि सामाजिक वातावरण, साथी समूह, आस–पड़ोस का नैतिक मूल्यों पर सह–शिक्षा शाला में प्रशिक्षण से अधिक प्रभाव पड़ता है। शाला का वातावरण नैतिक मूल्यों के विकास पर संगी–साथियों की अपेक्षा कम प्रभावशाली होता है। **पूनम गुप्ता (2007)** के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि विभिन्न मूल्यों में लिंग भेद होता है। बालिकाएँ बेईमान, चोरी, झूठ बोलना जैसे नकारात्मक नैतिक व्यवहारों को लड़को की तुलना में नहीं अपनाती। सह–शिक्षा में अध्ययन करते रहे बालकों में – ईमानदारी, दोस्ती, सच्चाई, भाई–चारा और सहयोग जैसे नैतिक गुण एकल, विद्यालयों की तुलना में अधिक पाया गया। अध्ययन परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि शाला के पर्यावरण का प्रभाव बालक–बालिकाओं पर पड़ता है यद्यपि इसमें लैंगिक भेद भी स्पष्ट दिखाई देते हैं। नैतिक मूल्यों का व्यक्ति के जीवन में बहुत अधिक महत्व है। बच्चा जब जन्म लेता है और जैसे–जैसे उसमें नैतिक मूल्यों का विकास होता जाता है व सामाजिक होता जाता है तथा उसके व्यक्तित्व का विकास होता जाता है। शिक्षा समाज की वह सीढ़ी है, जिस पर पांव रखकर व्यक्ति अपने संस्कारों को सँवारता है और जीवन को दिशा प्रदान करता है। शिक्षा प्राप्त करने के माध्यमों का अपना अलग–अलग महत्व होता है। विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर व्यक्तित्व विशेषताओं एवं अभिभावकों के सामाजिक–आर्थिक स्तर पर निर्भर करता है कि उनके पाल्यों के लिये किस माध्यम से शिक्षा ग्रहण करना सर्वाधिक लाभ का होगा जिससे वे भविष्य में सफल व्यक्ति बनकर देश के उन्नयन में भागीदार हो सकें।

अध्ययन से प्राप्त परिणाम यह बताने में सक्षम होंगे कि क्या माध्यम का प्रभाव विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य पर पड़ता है ? और यदि पड़ता है तो किस माध्यम के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्य अधिक सकारात्मक होते हैं जिससे विद्यार्थियों को नैतिक मूल्यों के विकास हेतु सुझाव दिये जा सकेंगे जिससे कि जहाँ एक ओर भारतवर्ष को अच्छे नागरिक मिलेंगे वहीं दूसरी ओर वे उससे विकासशील से विकसित देश बनाने में अपनी सकारात्मक भूमिका का निर्वाह कर सकेंगे।

**उद्देश्य**– 1. क्या बालकों के नैतिक मूल्यों पर माध्यम

*-** सहायक प्राध्यापक, मानव विकास, शासकीय स्वाशासी मो.ह. गृहविज्ञान एवं विज्ञान महिला महाविद्यालय, जबलपुर
*** सेवानिवृत्त प्राध्यापक, शासकीय शिक्षा मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय, जबलपुर
**** छात्रा, एम.एस-सी. मानव विकास विकास, शासकीय स्वाशासी मो.ह.गृहविज्ञान एवं विज्ञान महिला महा. जबलपुर

(हिन्दी एवं अंग्रेजी) का प्रभाव पड़ता है?2. क्या बालिकाओं के नैतिक मूल्यों पर माध्यम (हिन्दी एवं अग्रेजी) का प्रभाव पड़ता है? 3. क्या बालक एवं बालिकाओं (विद्यार्थियों) के नैतिक मूल्यों पर माध्यम (हिन्दी एवं अंग्रेजी) का प्रभाव पड़ता है।

**परिकल्पना** – 1. हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के बालकों के नैतिक मूल्यों में कोई अंतर नहीं होता है। 2. हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम की बालिकाओं के नैतिक मूल्यों में कोई अंतर नहीं होता है। 3. हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के बालक–बालिकाओं (विद्यार्थियों) के नैतिक मूल्यों में कोई अंतर नहीं होता है।

**चर– स्वतंत्र चर–माध्यम परतंत्र चर–नैतिक मूल्य** –1. ईमानदारी 2. लगनशीलता, 3. मानवता एवं 4. विनम्रता **नियंत्रित चर–आयु**–13 से 16 वर्ष एवं **कक्षा**–8वीं से 9वीं

**परीक्षण** – नैतिक मूल्य मापनी अनुसंधान केन्द्र, सरस्वती शिक्षा महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

**न्यादर्श** –

| माध्यम | बालक | बालिकाएँ | योग |
|---|---|---|---|
| हिन्दी | 30 | 30 | 60 |
| अंग्रेजी | 30 | 30 | 60 |
| योग | 60 | 60 | 120 |

**अनुसंधान विधि** – जबलपुर संभाग के माध्यमिक शालाओं की पढ़ाये जाने वाले माध्यम के अनुसार सूची बनाकर हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम की शालाओं के चुने गये छात्र–छात्राओं पर नैतिक मूल्य मापनी का प्रशासन किया गया ।

**विश्लेषण एवं व्याख्या** – परिणामों का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है –

**तालिका क्रमांक – 01 हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के बालकों के नैतिक मूल्य – "ईमानदारी", "लगनशील", "मानवता" एवं "विनम्रता" के तुलनात्मक परिणाम**

| नैतिक मूल्य | माध्यम | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | क्रांतिक अनुपात | "पी"मान |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमानदारी | हिन्दी | 30 | 7.96 | 2.30 | 3.14 | < 0.01 |
| | अंग्रेजी | 30 | 9.66 | 1.87 | | |
| लगनशीलता | हिन्दी | 30 | 8.26 | 3.02 | 1.73 | > 0.05 |
| | अंग्रेजी | 30 | 9.53 | 2.33 | | |
| मानवता | हिन्दी | 30 | 8.73 | 2.81 | 5.93 | < 0.01 |
| | अंग्रेजी | 30 | 12.20 | 1.68 | | |
| विनम्रता | हिन्दी | 30 | 7.43 | 2.60 | 6.06 | < 0.01 |
| | अंग्रेजी | 30 | 11.13 | 2.13 | | |

स्वतंत्रता के अंश – 580.05 पर सार्थकता हेतु न्यूनतम निर्धारित मान – 2.00
0.01 पर सार्थकता हेतु न्यूनतम निर्धारित मान – 2.66

**तालिका क्रमांक – 02 हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम की बालिकाओं के नैतिक मूल्य – "ईमानदारी", "लगनशील", "मानवता" एवं "विनम्रता" के तुलनात्मक परिणाम**

| नैतिक मूल्य | माध्यम | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | क्रांतिक अनुपात | "पी" मान |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमानदारी | हिन्दी | 30 | 10.80 | 1.69 | 1.25 | > 0.05 |
| | अंग्रेजी | 30 | 10.30 | 1.44 | | |
| लगनशीलता | हिन्दी | 30 | 11.30 | 1.27 | 1.73 | > 0.05 |
| | अंग्रेजी | 30 | 10.50 | 2.18 | | |
| मानवता | हिन्दी | 30 | 13.50 | 0.80 | 4.66 | < 0.01 |
| | अंग्रेजी | 30 | 12.10 | 1.44 | | |
| विनम्रता | हिन्दी | 30 | 12.20 | 2.26 | 2.69 | < 0.01 |
| | अंग्रेजी | 30 | 10.80 | 1.75 | | |

स्वतंत्रता के अंश – 580.05 पर सार्थकता हेतु न्यूनतम निर्धारित मान – 2.00
0.01 पर सार्थकता हेतु न्यूनतम निर्धारित मान – 2.66

**तालिका क्रमांक – 02 हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के बालक–बालिकाओं (विद्यार्थियों) के नैतिक मूल्य – "ईमानदारी", "लगनशील", "मानवता" एवं "विनम्रता" के तुलनात्मक परिणाम**

| नैतिक मूल्य | माध्यम | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | क्रांतिक अनुपात | "पी" मान |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ईमानदारी | हिन्दी | 60 | 9.38 | 2.51 | 1.07 | > 0.05 |
| | अंग्रेजी | 60 | 9.98 | 1.83 | | |
| लगनशीलता | हिन्दी | 60 | 9.80 | 2.75 | 0.30 | > 0.05 |
| | अंग्रेजी | 60 | 10.00 | 2.31 | | |
| मानवता | हिन्दी | 60 | 11.10 | 11.29 | 0.35 | > 0.05 |
| | अंग्रेजी | 60 | 12.15 | 12.25 | | |
| विनम्रता | हिन्दी | 60 | 9.81 | 3.41 | 0.61 | > 0.05 |
| | अंग्रेजी | 60 | 10.96 | 1.95 | | |

स्वतंत्रता के अंश – 58 0.05 पर सार्थकता हेतु न्यूनतम निर्धारित मान – 2.00
0.01 पर सार्थकता हेतु न्यूनतम निर्धारित मान – 2.66

हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के बालकों के नैतिक मूल्य–ईमानदारी, मानवता एवं विनम्रता में माध्यम का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है क्योंकि तीनों मूल्यों के लिय क्रांतिक अनुपातों के मूल्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक हैं। अंग्रेजी माध्यम के बालकों में ये मूल्य हिन्दी माध्यम के बालकों की अपेक्षा अधिक हैं।

नैतिक मूल्य–लगनशीलता में माध्यम का कोई प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं पड़ रहा है क्योंकि इस मूल्य के लिये क्रांतिक अनुपात का मान सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं है अर्थात् हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के बालकों के नैतिक मूल्य–लगनशीलता में कोई अंतर नहीं है।

हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम की बालिकाओं के नैतिक मूल्य–मानवता एवं विनम्रता पर माध्यम का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ रहा है, क्योंकि दोनों मूल्यों के लिये क्रांतिक अनुपात के मूल्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक हैं। हिन्दी माध्यम की बालिकाओं में ये मूल्य अंग्रेजी माध्यम की बालिकाओं की अपेक्षा अधिक हैं। बालिकाओं के नैतिक मूल्य–ईमानदारी एवं लगनशीलता में माध्यम का प्रभाव दिखाई नहीं पड़ रहा है क्योंकि इन मूल्यों के लिये क्रांतिक अनुपात का मान सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं है, अर्थात् हिन्दी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम की बालिकाओं के नैतिक मूल्य–ईमानदारी एवं लगनशीलता पर माध्यम का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक मूल्य–ईमानदारी, लगनशीलता, मानवता एवं विनम्रता पर माध्यम का प्रभाव नहीं पड़ा है क्योंकि हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के बालक एवं बालिकाओं के इन गुणों में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है। उपरोक्त तालिकाओं के परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि बालकों के लिये नैतिक मूल्य– ईमानदारी, मानवता, विनम्रता पर माध्यम का प्रभाव पड़ा है। अंग्रेजी माध्यम के बालकों में हिन्दी माध्यम के बालकों की अपेक्षा नैतिकता अधिक है जबकि बालिकाओं में मानवता एवं विनम्रता पर माध्यम का प्रभाव पड़ा है। हिन्दी माध्यम की बालिकाओं में यह गुण अंग्रेजी माध्यम की बालिकाओं की अपेक्षा अधिक है। बालकों के लिये लगनशीलता एवं बालिकाओं के लिये ईमानदारी एवं लगनशीलता पर माध्यम का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। बालक एवं बालिकाओं के सम्मिलित समूह अर्थात् विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों पर माध्यम का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है क्योंकि चारों नैतिक मूल्यों में हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम के बालक–बालिकाओं के मध्य सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है। इस प्रकार उपरोक्त परिणाम यह स्पष्ट कर रहे हैं कि बालक एवं बालिकाओं के पृथक समूहों पर कुछ मूल्यों पर माध्यम का प्रभाव पड़ा है, जबकि कुछ मूल्य पर इसका प्रभाव नहीं पड़ा है। अंग्रेजी माध्यम के बालकों में ईमानदारी, मानवता एवं विनम्रता का अधिक होना एवं हिन्दी माध्यम की बालिकाओं में मानवता एवं विनम्रता का अधिक होना माध्यम के प्रभाव को प्रदर्शित कर रहा है। सामान्य रूप से यह देखने में आता है कि अंग्रेजी माध्यम की शालाओं में औसत सामाजिक–आर्थिक स्तर से ऊंचे एवं अपेक्षाकृत उच्च संस्कृति के पढ़े लिखे माता–पिता के बालक अध्ययन हेतु आते हैं, इसलिये इनमें ईमानदारी, मानवता और विनम्रता का होना एक स्वाभाविक गुण के रूप में हो सकता है। भविष्य के जीवन के प्रति भी अधिक चिंतित होने के कारण भी इनकी मनोवृत्ति कुछ अलग प्रकार की हो सकती है। इनका शैक्षिक एवं व्यावसायिक आकांक्षा स्तर उच्च होता है। बालिकाओं के संदर्भ में हिन्दी माध्यम की बालिकाओं में मानवता एवं विनम्रता का गुण अधिक होना उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति को प्रदर्शित कर रहा है, क्योंकि संभव है कि अंग्रेजी माध्यम की बालिकाएं स्वयं को हिन्दी माध्यम की बालिकाओं की अपेक्षा अधिक उच्च समझती हों एवं वे

अहंवादी होकर मानवीय एवं विनम्र दृष्टिकोण को अपनाने में अपने आप को उतना प्रभावी नहीं बना पातीं। बालक एवं बालिकाओं के सम्मिलित समूह में माध्यम का कोई प्रभाव परिलक्षित नहीं होता जो इस बात को स्पष्ट कर रहा है कि जहाँ एक ओर अंग्रेजी माध्यम के बालकों के मध्यमान अधिक हैं वहीं दूसरी ओर हिन्दी माध्यम की बालिकाओं के मध्यमान अपेक्षाकृत अधिक हैं जिससे बालक एवं बालिकाओं के सम्मिलित समूह में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं हो पाया है। माध्यम के प्रभाव संबंधी पूर्व अनुसंधान उपलब्ध नहीं हो पाये हैं, परन्तु जो परिणाम उपलब्ध हैं उनमें स्पष्ट होता है कि **(टुबिन और टुबिन)** औसत सामाजिक–आर्थिक स्तर के माता–पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे समाज द्वारा मान्य व्यवहार को अपनाएं एवं तदानुसार अपने मूल्यों का विकास करें। नैतिक मूल्यों के विकास में परिवार के बच्चों के वातावरण एवं धार्मिक शिक्षा की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। **सिन्हा, एन.के. (2006)** ने हायर सेकेण्डरी में नैतिक शिक्षा और नैतिक मूल्यों के विकास पर सह–शिक्षा शालाओं के प्रभाव का अध्ययन किया। परिणामों से यह ज्ञात हुआ कि सह–शिक्षा विद्यालयों में सामाजिक वातावरण, साथी–समूह, आस–पड़ोस का नैतिक मूल्यों पर प्रशिक्षण से अधिक प्रभाव पड़ता है। शाला का वातावरण नैतिक मूल्यों के विकास पर संगी साथियों की अपेक्षा कम प्रभावशाली होता है। **गुप्ता पूनम (2007)** ने बालक–बालिकाओं के मध्य लैंगिक भेद एवं विद्यालय का मूल्यों पर प्रभाव देखा। इनके परिणामों में लिंग भेद के आधार पर यह स्पष्ट हुआ कि बालिकाएँ बेईमान, चोरी, झूठ बोलना जैसे नकारात्मक नैतिक व्यवहारों को लड़कों की तुलना में नहीं अपनाती। इस प्रकार शैक्षिक वातावरण प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से कुछ मात्रा में मूल्यों को प्रभावित करता है।

**निष्कर्ष–** 1. अंग्रेजी माध्यम के बालकों में नैतिक मूल्य–ईमानदारी, मानवता तथा विनम्रता अधिक है जबकि लगनशीलता में माध्यम का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। 2. हिन्दी माध्यम की बालिकाओं में नैतिक मूल्य–विनम्रता तथा मानवता अधिक पाई गई जबकि ईमानदारी एवं लगनशीलता पर माध्यम का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। 3. बालक एवं बालिकाओं के सम्मिलित समूह (विद्यार्थियों) में नैतिक मूल्य–ईमानदारी, लगनशीलता, मानवता एवं विनम्रता पर माध्यम का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ

☆बर्मन गायत्री (2005) – **किशोरावस्था,** शिवा प्रकाशन, श्रीगणेश मार्केट, खजूरी बाजार, इन्दौर। ☆भटनागर सुरेश (1970) – **बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान,** तृतीय संस्करण 1978–79, पृष्ठ – 257–268. ☆ फ्रीमैन एफ.एस. (1952) – **"थ्योरी एण्ड प्रेक्टिस ऑफ साइकोलॉजिकल टेस्टिंग",** हेनरी होल्ट, राईनहार्ट, न्यूयार्क। ☆ हरलॉक एलिजाबेथ बी (1947) – **"चाइल्ड डेवलेपमेन्ट"** मैग्राहिल कं., न्यूयार्क। ☆ कपिल एच.के. (1984) – **"सांख्यिकीय के मूल तत्व"** तृतीय संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, पृष्ठ 319–331. ☆ माथुर उषा एवं श्रद्धा (1988–89, 1991) – **"किशोरावस्था विवाह तथा पारिवारिक जीवन"** समता प्रकाशन, मंदिर वाली गली करौल बाग, दिल्ली, पृष्ठ 64. ☆ श्रीवास्तव रामजी (2005) – **"आधुनिक विकासात्मक मनोविज्ञान"** मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, दिल्ली। ☆ स्वामी रामदेव जी महाराज (2008) – **"द्वितियो नास्ति"** पतंजली योगपीठ, हरिद्वार योग विज्ञान शिविर जबलपुर, 25 नवम्बर से 3. नवम्बर गैरीसन ग्राउंड सदर, जबलपुर ☆ Gupta Poonam, P.K. Sharma. N.K. Sinha, (2007) - **A study of Moral value in adolescents,** Asian Journal of Psychology & Education, Vol. 40, No. 78, Page 14-18. ☆Internet - www.google.com. ☆ Joshi Sonu, Nav Rattan Sharma, Amrita Yadav (2004) - **Asian Journal of Psychology & Education** Vol. 37, No. 1-2, Page 18-21.